Government Degree College, Madhuban,
Pakridayal, East-Champaran
(B.R.A.B.U. Muzaffarpur)

B.A., Part-I, Hon./Sub.
Subject : Geography
Topic : उष्ण वायु - राशियाँ

By,
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant Professor

Email ID : Jamshedmit@gmail.com
Whatsapp No.: 9097179092

ऐसा परिवर्तन निम्न तीन बातों पर निर्भर करता है :-

(i) स्थलीय या जलीय सतह का स्वभाव
(ii) उत्पत्ति क्षेत्र से प्रभावित क्षेत्र तक वायु-राशि का गमन - मार्ग
(iii) उत्पत्ति क्षेत्र से प्रभावित क्षेत्र में पहुँचने की अवधि

जब किसी वायु राशि के निचले भाग का तापमान उस सतह से कम होता है जिसपर वह पहुँचती है तो वायु - राशि का निचला भाग सतह से अधिक तापमान के कारण गर्म होने लगता है। फलस्वरूप वायु - राशि में लम्बवत गति होने लगती है और वह अस्थिर हो जाती है। इसके विपरित जब वायु - राशि के नीचे के भाग का तापमान उस सतह से अधिक होता है, जिसपर वह पहुँचती है तो वायु - राशि नीचे से ठण्डी होती है। परिणामस्वरूप उसमें लम्बवत गति रुक जाती है और वह स्थिर हो जाती है। इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जब वायु-राशि धरातलीय तापमान की अपेक्षा गर्म होती है तो वह गर्म वायु - राशि कहलाती है। परन्तु जब वह धरातलीय तापमान की तुलना में ठण्डी होती है तो वह ठण्डी वायु - राशि कहलाती है।

वायु - राशि का गर्म या ठण्डा होना वस्तुत: उसके नीचे स्थित धरातल के तापमान पर निर्भर करता है।

वायु - राशियों में ऊष्मागतिक परिवर्तन उस समय भी हो जाता है, जबकि बाहर से उसमें आर्द्रता का समावेश हो जाता है। जब वायु - राशि में वायु नीचे से ऊपर उठती है तो वह अस्थिर होती है और जब वह ऊपर से नीचे उतरती है तो वह स्थिर होती है। वायु - राशियों में ऐसा यांत्रिक परिवर्तन क्रमशः — चक्रवात और प्रतिचक्रवातों से संबंधित होता है। इस प्रकार ऊष्मागतिक आधार पर वायु - राशियों के दो प्रमुख प्रकार हैं :—

(a) उष्ण वायु - राशियाँ,
(b) शीतल वायु - राशियाँ

इसके पुनः स्थिर व अस्थिर दो भेद किये जाते हैं।

(a) उष्ण वायु - राशियाँ :— वे वायु - राशियाँ जो अपने नीचे के धरातल से अधिक गर्म होती हैं, उष्ण - वायु - राशियाँ कहलाती हैं। ये वायु - राशियाँ नीचे के धरातल पर

अपना तापमान छोड़ती जायेगी और नीचे से ठण्डी होती जायेगी। परिणामस्वरूप उसमें लम्बवत् गति स्थगित होती जाती है और उसमें स्थिरता आने लगती है। इन वायु राशियों के महत्त्वपूर्ण उत्पत्ति - क्षेत्र उपोष्ण कटिबन्ध के प्रतिचक्रवात होते हैं। ग्रीष्म में ये वायु - राशियाँ दक्षिणी महाद्वीपों, विशेषकर प्रतिचक्रवातीय प्रदेशों के ऊपर भी पनप जाया करती हैं। उष्ण वायु - राशियाँ निम्न लक्षणों द्वारा पहचानी जा सकती हैं :—

(i) ऊपर उठती हुई वायु के शीतल होने की स्थिर गति अथवा निम्न तहों में ऊँचे तापमान का पाया जाना।

(ii) सूक्ष्म विक्षोभ - युक्त पवनें,

(iii) कमजोर दृश्यता,

(iv) ऊँची सापेक्षिक आर्द्रता,

(v) स्तरी मेघ, धुन्ध और कुहरा,

(vi) बूँदाबूँदी का होना।

उष्ण वायु-राशियाँ मूलतः दो प्रकार की होती हैं।—

(i) महाद्वीपीय गर्म वायु-राशि
(ii) महासागरीय गर्म वायु-राशि।

Next Class

शीतल वायु राशियाँ

Md. Jamshed Alam